महात्मा गाँधी बालिका विद्यालय (पी0जी0) कॉलेज
फिरोजाबाद

रेन्जर्स का इतिहास
एवं पंजीकरण

डॉ. फरहा तबस्सुम
एसोसिएट प्रोफेसर
विभागाध्यक्षा– उर्दू विभाग
रेन्जर्स प्रभारी

रेंजर्स

स्वस्थ समाज के लिए हमारी युवा पीढ़ी का तन–मन से स्वस्थ होना आवश्यक है। रोवर्स रेंजर्स 16 से 17 वर्ष की अवस्था के बालक बालिका के सम्पूर्ण विकास का नाम है। रोवर्स रेंजर्स हमारी युवा पीढ़ी को सही मार्ग दिखाने का कार्य करता है।

प्रथम विश्व युद्ध 1914 से 1919 तक चला। स्काउटिंग इंग्लैण्ड में युद्ध से पूर्व 1907 में प्रारम्भ हुई। जब युद्ध समाप्त हुआ तब इस पाँच साल की अवधि में बहुत से स्काउट निर्धारित स्काउट अवस्था को पार कर चुके थे और वे 18–20 वर्ष से भी अधिक आयु के हो चुके थे। अब इन लोगों को 12–13 वर्ष के बच्चों के साथ खेलना अनुकूल नहीं लगता था। इसके अतिरिक्त 16 वर्ष से अधिक उम्र के नये लोग भी स्काउटिंग की ओर आकर्षित होने लगे थे। "बेडेन पावेल" के मस्तिष्क में एक नई योजना आई। उन्होने पहले सीनियर स्काउट्स की योजना निकाली बाद में उसे ही रोवर्स की योजना का नाम दे दिया। सन् 1919 में उन्होने एक पुस्तक "रोवरिंग टू सक्सेज" भी निकाली, जिसके कारण यह योजना उन्नति करने लगी।

रोवर रेंजर क्या है:–

तीन से पाँच वर्ष के बालक बालिकाओं को **"बनी"** कहते हैं, जिनका सिद्धान्त है **"प्रसन्न रहो"**। पाँच से दस वर्ष के बच्चे **"कब या बुलबुल"** कहलाते हैं, इनका लक्ष्य और आदर्श वाक्य है– **"कोशिश करो"**। इसके पश्चात् दस से सत्रह वर्ष तक के बालक–बालिका **स्काउट या गाइड** कहलाते हैं और इनका लक्ष्य भिन्न–भिन्न कला कौशलों में प्रयासरत रहना तथा इनका आदर्श वाक्य है– **"तैयार रहो"**। स्काउट गाइड अवस्था पूर्ण होने पर भी वे स्काउटिंग गाइडिंग की शिक्षा को जब आगे बढ़ाना चाहते है, तब उस अवस्था को बालकों के लिये **रोवर्स** तथा बालिकाओं के लिये **रेंजर्स** कहते हैं। इनका आदर्श वाक्य है– **"सेवा करो"**। उन्हें समाज सेवा के योग्य बनाना ही इसका प्रमुख उद्देश्य है।

जो व्यक्ति आन्दोलन की इन सभी अवस्थाओं से होकर गुजरता है, उसे स्काउटिंग गाइडिंग का वास्तविक ज्ञान हो जाता है। वह समाज सेवा के लिये पूर्णरूपेण तैयार हो जाता है। लेकिन नये व्यक्ति भी जो पहले स्काउट या गाइड नहीं रहे, उन्हे भी इस शिक्षा का लाभ दिया जा सकता है।

जो बालक–बालिका 16–17 वर्ष की अवस्था के हो जाते हैं, तो यह उनके जीवन का कठिन समय होता है। इस समय उन्हें सही मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। इस समय

यदि वह अच्छी संगत में रहते है तो एक उपयोगी नागरिक बनकर देश की सेवा कर सकते हैं। लेकिन अगर बुरी संगत में पड़ जाते हैं तो वह कलंक बन जाते हैं।

रोवरिंग/रेजरिंग ऐसे ही काल के लिये एक लाभदायक सुविधा है, जिसके कारण वह प्रसन्नचित्त, स्वस्थ तथा उत्तम नागरिक के रूप में विकसित होता है। स्काउटिंग गाइडिंग को आगे ले जाने की महत्वपूर्ण कड़ी ही रोवरिंग–रेंजरिंग है। वे ही स्काउट–गाइड आन्दोलन के विभिन्न रूप में स्काउट–गाइड कमिश्नर व अन्य वारन्टेड अधिकारी बनकर स्काउटिंग–गाइडिंग की ज्योति जलाये रख सकते हैं। हमारा महाविद्यालय बालिकाओं का विद्यालय है इसलिए यहाँ रेंजर्स इकाई संचालित है। इस रेंजर्स इकाई का पंजीकरण "**लक्ष्मीबाई रेंजर्स टीम**" के नाम से है। लक्ष्मीबाई रेंजर्स टीम महाविद्यालय में कई वर्षो से कार्यरत है।

डॉ0 निर्मला यादव
प्राचार्या

डॉ0 फरहा तबस्सुम
रेंजर्स–प्रभारी